

क. पति-पत्नी के बीच संबंध (कुलुस्सियों 3:18-19)

- ❖ एक ही समय में लिखी गई कुलुस्सियों और इफिसियों की पत्रियाँ पति-पत्नी के संबंधों के विषय में समान (और परस्पर पूरक) सलाह प्रदान करती हैं (कुलुस्सियों 3:18-19; इफिसियों 5:21-33)।
 - पत्नी का अपने पति के अधीन होना (कुलुस्सियों 3:18; इफिसियों 5:22-24)
 - (1) यह अधीनता परस्पर अधीनता के अंतर्गत है (इफिसियों 5:21), और “प्रभु में उचित” होनी चाहिए।”
 - पतियों को अपनी पत्नियों से प्रेम करना चाहिए (कुलुस्सियों 3:19; इफिसियों 5:28)
 - (1) उसी प्रेम से प्रेम करना चाहिए, जिस प्रेम से मसीह ने हमसे प्रेम किया (इफिसियों 5:25)।
 - (2) वे अपने कल्याण के लिए स्वयं जिम्मेदार हैं (इफिसियों 5:29)।
 - (3) “कठोर” न होना—अर्थात् उन्हें कड़वा न करना, कठोर या हिंसक व्यवहार न करना, और तानाशाही रवैया न अपनाना।
- ❖ पति-पत्नी दोनों को एक टीम के रूप में काम करना चाहिए, एक-दूसरे से सलाह लेनी चाहिए और सर्वसम्मति से निर्णय लेने चाहिए, जिसमें पति परिवार का आदर्श नेता हो। दोनों को हमेशा एक-दूसरे के कल्याण की खोज करनी चाहिए।

ख. माता-पिता और बच्चों के बीच संबंध (कुलुस्सियों 3:20-21)

- ❖ आज के समाज में “माता-पिता” शब्द को स्थापित विवाहों वाले परिवारों के साथ-साथ एकल-अभिभावक परिवारों पर भी लागू किया जाना चाहिए। पौलुस के अनुसार, एक स्वस्थ संबंध केवल माता-पिता की ही नहीं, बल्कि बच्चों की भी जिम्मेदारी है।
 - पुत्रों और पुत्रियों की जिम्मेदारियाँ (कुलुस्सियों 3:20; इफिसियों 6:1-3)
 - (1) बच्चों की आज्ञाकारिता वैकल्पिक नहीं है।
 - (2) यह आज्ञाकारिता पाँचवीं आज्ञा पर आधारित है।
 - (3) इसके अतिरिक्त, आज्ञाकारिता का अपना प्रतिफल भी होता है।
 - माता-पिता की जिम्मेदारियाँ (कुलुस्सियों 3:21; इफिसियों 6:4)
 - (1) बच्चों को इस प्रकार शिक्षा दें कि वे हताश या निरुत्साहित न हों—उन्हें उकसाएँ या चिढ़ाएँ नहीं।
 - (2) अधीरता या मनमाने व्यवहार से उन्हें क्रोधित न करें।
 - (3) उन्हें परमेश्वर के मार्गों में शिक्षा दें (व्यवस्थाविवरण 6:6-7; नीतिवचन 22:6)।
- ❖ प्रातः और/या सायंकाल का परिवारिक उपासना समय बच्चों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है, ताकि वे परमेश्वर के विषय में सीखें और अनन्त जीवन के लिए निर्णय ले सकें। और यह न भूलें कि हमारा उदाहरण ही हमारे बच्चों का सबसे महान शिक्षक होता है।

ग. मालिकों और कर्मचारियों के बीच संबंध (कुलुस्सियों 3:22-25; 4:1)

- ❖ पौलुस के समय में विद्यमान दासता का संबंध, उन प्रकार की दासताओं से बहुत कम मिलता-जुलता है जो दुर्भाग्यवश आज भी मौजूद हैं। इसलिए हमें इस परामर्श को मालिक/अधीनस्थ (बॉस-कर्मचारी) संबंध के संदर्भ में समझना चाहिए।
 - अधीनस्थों का व्यवहार (कुलुस्सियों 3:22-25; इफिसियों 6:5-8)
 - (1) हमेशा अपना सर्वश्रेष्ठ दें, चाहे कोई देख रहा हो या नहीं।
 - (2) अपने कार्य में उत्कृष्टता के लिए प्रयास करें, मानो आप उसे परमेश्वर के लिए कर रहे हो।
 - (3) जब डाँट/ताड़ना उचित हो, तो उसे स्वीकार करें।
 - (4) अच्छे काम का फल अवश्य मिलता है।
 - (5) एक बुरा मालिक हमें अधीनता से मुक्त नहीं करता (1 पतरस 2:18)
 - मालिकों (बॉसों) का व्यवहार (कुलुस्सियों 4:1; इफिसियों 6:9)
 - (1) न्याय और धर्म के साथ नेतृत्व करें।
 - (2) धमकियों या मनमानी माँगों का उपयोग न करें।
 - (3) प्रत्येक बॉस के ऊपर भी एक महान बॉस है, जिसके प्रति उसे उत्तरदायी होना है।
- ❖ अंततः, हम सब—चाहे बॉस हों या अधीनस्थ—मसीह के दास हैं, क्योंकि हम उसी की सेवा करते हैं।

घ. कलीसिया में संबंध (कुलुस्सियों 4:2-4)

- ❖ हमें "एक-दूसरे के लिए प्रार्थना करने" के लिए प्रेरित किया गया है, क्योंकि "धर्मी जन की प्रार्थना के प्रभाव से बहुत कुछ हो सकता है।" (याकूब 5:16)।
- ❖ सुबह और शाम की प्रार्थनाओं से आगे बढ़कर, पौलुस सुझाव देता है कि हम हर समय प्रार्थना करें (कुलुस्सियों 4:2; इफिसियों 6:18; 1 थिस्सलुनीकियों 5:17)। जैसे नहेम्याह ने राजा के सामने चुपचाप प्रार्थना की (नहेम्याह 2:4), वैसे ही हमें हर स्थान और हर परिस्थिति में प्रार्थना करने का विशेषाधिकार मिला है।
- ❖ इसके अतिरिक्त, हमें यह आश्वासन है कि पवित्र आत्मा हमारी प्रार्थनाओं को प्रभावी बनाने के लिए उन्हें परिवर्तित करता है (रोमियों 8:26)।
- ❖ पौलुस विशेष रूप से उन लोगों के लिए प्रार्थना करने का अनुरोध करता है जो सुसमाचार का प्रचार करते हैं (कुलुस्सियों 4:3-4; इफिसियों 6:19)। चाहे प्रचारक के पास सुसमाचार-कार्य का अनुभव कम हो या अधिक, इस कार्य के लिए कोई भी अपने आप में पर्याप्त नहीं है। स्वयं पौलुस न केवल प्रार्थना करता था, बल्कि भाइयों से यह भी आग्रह करता था कि वे उसके लिए प्रार्थना करें, ताकि उसके शब्द सही और उपयुक्त हों।

ङ. अविश्वासियों के साथ संबंध (कुलुस्सियों 4:5-6)

- ❖ हमारे पास महान लाभ हैं: हमने जाना है कि यीशु ने हमारे लिए क्या किया; हमने उसे स्वीकार किया है; और हमें उद्धार का आश्वासन है।
- ❖ हम यह इसलिए जानते हैं क्योंकि किसी ने हमें बताया। उसी प्रकार, हमें भी यह संदेश दूसरों के साथ बाँटना है। प्रेरित पौलुस के अनुसार, हमें "बाहरवालों"—जो अभी यीशु को नहीं जानते—के साथ कैसे संबंध रखने चाहिए (कुलुस्सियों 4:5-6)?
 - बुद्धिमानी से हमें उन लोगों के साथ संबंध में जो अभी यीशु को नहीं जानते "स्वर्ग से आने वाली बुद्धि" की आवश्यकता है (याकूब 3:17)।
 - दयालु शब्दों के साथ हमारे शब्द सदैव विनम्र और मधुर होने चाहिए, ताकि वे आनंद के साथ हमारी बात सुनें।
 - "सलोने" शब्दों के साथ हमारी बातचीत उचित हो और सामने वाले व्यक्ति तथा उनके परिवेश के अनुसार ढली हुई हो।
 - हर एक को उचित रीति से उत्तर देते हुए क्योंकि हर व्यक्ति अलग है, इसलिए हर क्षण क्या उत्तर देना है—इसमें पवित्र आत्मा हमारा मार्गदर्शन करेगा।